महिला सशक्तिकरण और संतोष श्रीवास्तव जी की कहानियाँ

अविनाश दिलीप कांबळे शोध छात्र, हिंदी विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर।

ईमेल :shabdavi421@gmail.com

शोध सारांश :-

आज भारत सहित पूरे विश्व में महिला सशक्तिकरण की बातें चल रही है। लेकिन सशक्तिकरण की इस अवधारणा में महिलाएँ आज भी अपने अस्तित्व को ढूंढ रही है। भारत में आज महिला सशक्तिकरण के प्रयास और उसको लेकर अनेक आंदोलन हो रहे हैं। चिकित्सा, घर प्रबंधन, परिवार, विज्ञान, मॉडलिंग, फिल्म, राजनीति, साहित्य आदि जगहों में महिलाओं का महत्वपूर्ण योगदान है। आज साक्षर नारी समाज में अपना स्थान, पहचान बना रही है, वर्चस्व बढ़ा रही है, किंतु निरक्षर नारी पीछे हट रही है, बराबरी की भागीदारी से दूर रह रही है। नारी तो जन्म से ही प्रतिभावान है, परंतु पुरुषप्रधान समाज की निरंकुश मानसिकता से वह दबी हुई है। वर्तमान में पुरुषों की मानसिकता में बदलाव आने के कारण नारी की प्रतिभा भी जागरूक हुई है। वह अब अन्याय, अत्याचार के खिलाफ संघर्ष कर रही है। संविधान ने महिलाओं को समान अवसर दिए हैं। उनका सशक्तिकरण करने के लिए कानूनी नियम बनाएं हैं। इसी संविधानिक अधिकारों की बदौलत नारी स्वतंत्रता, समानता, बंधुता जैसे मूल्यों के साथ अपना जीवन यापन कर रही है।

हिंदी साहित्य की अनेक विधाओं में महिला सशक्तिकरण को लेकर साहित्य का निर्माण हुआ है। बदलते परिवेश के साथ सशक्तिकरण के संदर्भ भी बदल रहे है। आज भी सशक्तिकरण के इस दौर में महिला अपने अस्तित्व की खोज करती है। इसी समस्या को लेकर पुरूषों के बराबर महिला साहित्यकारों ने भी अपनी कलम चलाई है। संतोष श्रीवास्तव जी ने नारी जीवन से संबंधित हर समस्याओं के गहराई में जाकर, जांच करके नारी जीवन के हर पहलू को अपनी कहानियों में दिखाया है। पितृसत्ताक समाज में नारी का उत्पीड़न होता है, पुरुष नारी को अपनी निजी संपत्ति मानता है, लेकिन आज की नारी अन्याय, अत्याचार, शोषण के खिलाफ संघर्ष करके क्रांति की मशाल लेकर समग्र नारियों के प्रति अपना दायित्व निभाती है। भारतीय नारी आर्थिक स्तर पर स्वतंत्र होते हुए भी सुखी जीवन के लिए संघर्षरत है।

बीजशब्द :- सशक्तिकरण, नारी जीवन, शोषण, रीति-रिवाज, व्यसनाधीनता।

21 वीं सदी की महिला लेखिकाओं में संतोष श्रीवास्तव की अपनी एक अलग पहचान है। साक्षर महिला अपने आपको पुरूषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम कर रही है। परंपरा रीति-रिवाजों को तोड़कर स्वतंत्रता से अपना जीवन जी रही है। निरक्षर महिला वही पुरानी परंपरा, रीति-रिवाजों में अपने आपको बंधी हुई है। श्रीवास्तव जी ने ऐसे ही साक्षर, निरक्षर महिलाओं का वर्णन अपनी कहानियों में किया है। मनीष कुमार जी महिला सशक्तिकरण के बारे में कहते है की "महिला सशक्तिकरण का तात्पर्य केवल स्त्रियों के सामाजिक उत्थान से नहीं है बल्कि इसमें समूची नारी जाति को शामिल किया गया है, जिन्हें किन्हीं कारणों से अपने विकास का अवसर नहीं मिला। ऐसी उपेक्षित लड़कियों व महिलाओं की प्रगति से ही सामाजिक उन्नति संभव है। ऐसी प्रगति की पृष्ठभूमि उनके शैक्षिक स्तर को सदृढ़ करके तैयार की जा रही है।"1 महिला सशक्तिकरण का तात्पर्य महिलाओं को पुरुषों के बराबर वैधानिक, राजनीतिक, मानसिक, सामाजिक एवं आर्थिक क्षेत्रों में उनके परिवार, समुदाय, समाज एवं राष्ट्र की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में निर्णय लेने की स्वतंत्रता से है। महिला सशक्तिकरण के संबंध में ऑफिस ऑफ द यूनाइटेड हाई कमिशनर फॉर ह्यूमन रायट्स में लिखा है, "यह अपने जीवन स्तर को सुधार कर अपने जीवन की दिशा को स्वयं निर्धारित कर सके।"2 महिला सशक्तिकरण से तात्पर्य है की महिला अपने जीवनस्तर में सुधार करके स्वयं को सशक्त बनाए। इसी प्रकार महिलाओं में शोषण के प्रति आवाज उठाने की ताकद संतोष श्रीवास्तव जी की कहानियों में दिखाई देती है। बदलते परिवेश के साथ आज की पीढ़ी पाश्चात्य को अपना रही है। खान-पान, पेहराव, रहन-सहन आदि में अपने आपको बदल रही हैं।

संतोष श्रीवास्तव जी की कहानी सपना ठहरा सा में अपने सपनों को तोड़कर माँ के सपनों को पूरा करने ले लिए नायिका गुंजन फिल्म के क्षेत्र में जाना और वहाँ पर फिल्म निर्देशक आदी के द्वारा शोषित होने का वर्णन दिखाई देता है। गुंजन की माँ को डान्सर बनना था, लेकिन वह अपनी लड़की गुंजन को डान्सर बनाती है। गुंजन डॉक्टर बनने का सपना छोड़कर अपने माँ के लिए डान्सर बनती है। फिल्म के क्षेत्र को कोई भी अच्छा अथवा सुरक्षित नहीं मानता। गुंजन के पिता कहते है की "जानती भी हो कि फिल्में लड़कियों के लिए कितनी असुरक्षित है। जीवन जीने लायक नहीं छोड़ती ये फिल्में।"3 फिल्म के क्षेत्र में महिलाओं को काम करना आसान नहीं है। पाश्चात्य प्रभाव के कारण फिल्म का रंग-रूप ही बदल चुका है। फिल्म में काम करना महिलाओं को अपने जीवन के साथ मरना ही है। फिल्म के क्षेत्र में काम करने के लिए महिलाओं को अपनी शारीरिक

संपदा को त्यागना पड़ता है। पुरुष प्रधान संस्कृति में पुरुष भी अपनी वासना हेतु उनको फिल्म में काम देते हैं और उनका शारीरिक शोषण करते हैं। इसी कहानी के पात्र फिल्म निर्देशक सूर्यवंशी कहता है, "देखो गुंजन...तुम मुझे खुश रखो मैं तुम्हें...देखना आसमान की ऊँचाईयाँ चुटकी बजाते ही नाप लोगी। क्या नहीं हैं तुम मैं...इतना अथाह रूप, दिलकश जवानी, कला का हुनर...और क्या चाहिए फिल्मों में हिट होने के लिए।"4 साक्षर महिला भी आज कम समय में ऊँचाईयों पर पहुँचने के लिए ऐसे रास्तों को अपनाती है। अपने पास सब कुछ हुनर होते हुए भी महिलाओं को शारीरिक शोषण को झेलना पड़ता है। वर्तमान में भी यह परिस्थिति फिल्म के क्षेत्र में दिखाई देती है। महिलाओं को अन्याय के विरुद्ध आवाज उठानी चाहिए क्योंकि आज निरक्षर महिलाओं के साथ साक्षर महिला भी ऐसे अत्याचारों को सहन करती है।

आसमानी आँखों का मौसम कहानी संग्रह में व्यसनाधीनता का चित्रण हुआ है। पाश्चात्य प्रभाव के कारण भारत में पुरुषों के बराबर आज महिलाएं भी व्यसनाधिन होती जा रही है। इस कहानी का नायक नायिका के घर मिलने जाता है तो उसे वहाँ पर एक शराब की बोतल दिखाई देती है। वह शराब की बोतल देखकर नायक नायिका को पूछता है कि आप शराब पीती है? जवाब में नायिका कहती है "क्यों औरत के लिए पीना पाप है क्या?"5 पाप-पुण्य के बीच पूरा मानव समाज व्यसनाधिनता के कारण अपने आपको बिगाड़ रहा है। अन्याय, अत्याचार के खिलाफ संघर्ष करने के बजाय स्त्री चुपचाप अन्याय सहन करती है। आज की महिलाओं को अपने जीवन स्तर में सुधार लाकर जीवन की सही दिशा को निर्धारित करना आवश्यक है।

पुरुष वर्ग की नजरों में नारी एक भोग वस्तु ही है। गूँगी कहानी में नायिका महुआ का शारीरिक, मानसिक शोषण का चित्रण दिखाई देता है। "मर्दों की दुनिया में औरत बस मांस की पुतली ही जन्मी है। मर्दों के मनोरंजन के लिए, संतुष्टि के लिए, सेवा के लिए और उनका वंश बढ़ाने के लिए।"6 आज भी यह परिस्थिति निरक्षर महिलाओं के संदर्भ में दिखाई देती है। चार दिवारों के बीच निरक्षर महिलाएं आज भी कैद है। वही पुरानी रीति-रिवाजों में अपना जीवन यापन कर रही है। समाज के लोगों के विचारों में परिवर्तन आना आवश्यक है। महिला एक भोग वस्तु न होकर एक समाज को निर्माण करने वाली शक्ति है। जिसके कारण ही हर एक समाज का निर्माण होता है। नारी ही समाज के सामने आदर्श नारी का चित्र रखती है।

आज भी पुरुषों द्वारा महिलाओं की सत्ता का विरोध किया जाता है। नेफ्रटीटी की वापसी कहानी में आज के समाज का ऐसा ही चित्र दिखता है। प्रेमनाथ और सोमनाथ सगे भाई इस कहानी के पात्र है। मालती देवी प्रेमनाथ की पत्नी है जिसने अर्थशास्त्र में पढ़ाई की है। जब घर के कारोबार की जिम्मेदारी मालती देवी को देनी की बात प्रेमनाथ अपने भाई से करता है तो उसका भाई कहता है, "देखो प्रेम...घर की लक्ष्मी घर में ही शोभा देती है। तुम बहु को क्यूँ कारोबार में इन्वाल्व कर रहे हो?"7 एक स्त्री ने कारोबार को संभालना आज के पुरुषों को पसंद नहीं आता। पुरुष प्रधान संस्कृति में पुरुष ही प्रथम स्थान पर रहा है। सशक्तिकरण के कारण आज की महिला खुद का कारोबार संभाल रही है। अपनी जिम्मेदारियों को खूब अच्छी तरह निभा रही है। चार दीवारों में कैद नारी आज पूरे विश्व में अपना अस्तित्व दिखा रही है।

समाज सेवा को ईश्वर सेवा मानकर आज बहुत सी नारियाँ काम कर रही है। गरीबों की सेवा, पिछड़े लोगों की सेवा, वृद्धों की सेवा आदि कामों में नारी सदैव तत्पर रहती है। नागफनियों के बीच कहानी में सब कुछ छोड़कर समाज सेवा करने की प्रबल इच्छा का वर्णन हुआ है। कुछ महिला अकेले रहना पसंद करती है, तो कुछ महिला सबके साथ मिलकर रहना पसंद करती है। राजनीति के क्षेत्र में भी आज की महिला सेवा का काम कर रही है। इस कहानी की नायिका विवेकानंद और मदर टेरेसा की प्रेरणा से गरीब पिछड़े लोगों की सेवा करना चाहती है। कुपोषण के शिकार बच्चे, एनेमिक महिलाएँ, दमा और गठिया से तड़पते बेहाल वृद्ध आदि की सेवा करना चाहती है। इसकी समाजसेवा की प्रबल इच्छा को देखकर उसकी माँ कहती है "लड़कियाँ ऐसे रहीं है कभी। सीधी तरह शादी ब्याह करो अपना करियर बनाओं...संड मुसंडों की राह मत पकड़ो।"8 समाजसेवा को संड मुसंडों की राह समझने वाले लोग आज भी समाज में मौजूद हैं। आज भी लड़कियों को शादी में बांधकर शिक्षा से दूर रखकर परिवार की सेवा करने के लिए प्रवृत्त किया जाता है। शिक्षा के कारण समाज के लोगों के विचारों में परिवर्तन हुआ है फिर भी ग्रामीण भागों में आज भी ऐसी परिस्थिति दिखाई देती है।

स्वतंत्रता पूर्व काल में जमींदार, ठाकुर, मालगुजार आदि धनवान लोगों द्वारा स्त्रियों का शारीरिक शोषण किया जाता था। स्त्री को एक रखैल की तरह रखा जाता था। स्वतंत्रता पूर्व काल की स्त्रियों का शोषण और वर्तमान की स्त्री का शोषण विरुद्ध संघर्ष पहल कहानी में दिखाई देता है। "वह अंग्रेजों का जमाना था और जमींदारों, ठाकुरों, मालगुजारों के हरम में खूबसूरत जवान बंजारिनें अपने पतियों के द्वारा प्रताड़ित नहीं की जाती थीं क्योंकि उन्हें ताउम्र बैठकर मजे से खाने ऐश करने के लिए धन मिलता था...यहाँ तक कि परिवार की एक लड़की अवश्य किसी न किसी मालदार की रखैल होने के लिए बिन ब्याह रखी जाती थी।"9 परंपरा से ही पुरुषों का स्त्री की और देखने का नजरिया एक भोग वस्तु की तरह ही रहा है। आज भी महिलाओं का इसी प्रकार शारीरिक शोषण होता है। पहले ठाकुर, जमींदार शोषण करते थे पर आज राजनीतिक लोग, छोटे-बड़े

कारोबारों के मालिक स्त्रियों का शारीरिक शोषण करते है। महिला सशक्तिकरण के इस दौर में सिर्फ महिलाओं की उन्नति देखना ही काफी नहीं है बल्कि आज के पुरुषों के दिमाग में महिलाओं के प्रति एक सम्मान, आदरभाव होना आवश्यक है।

निष्कर्ष :-

संतोष श्रीवास्तव जी ने अपनी कहानियों में नारी जीवन की समस्या और समाधान का वर्णन किया है। कहानियों के स्त्री पात्रों द्वारा नारी सशक्तिकरण और आज के नारी की समाज में स्थिति का वर्णन किया है। बदलते परिवेश के साथ महिलाओं के जीवन में भी बदलाव हुआ है। पाश्चात्य प्रभाव में आज की नारी अपना जीवन बीता रही है। आज भी नारी को अपनी पसंद से शिक्षा और शादी करने की इजाजत समाज में नहीं है। सशक्तिकरण के कारण आज की नारी अपने ऊपर के अन्याय, अत्याचार के खिलाफ आवाज उठा रही है, लेकीन ग्रामीण भागों में आज भी नारी वही पुरानी रीति-रिवाज और बंधनों में बंदी हुई है। सशक्तिकरण के इस दौर में आज भी साक्षर और निरक्षर नारी अपने अस्तित्व की खोज कर रही है। पुरुष प्रधान संस्कृति का प्रभाव आज भी दिखाई देता है। इसी प्रभाव के कारण बहुत से भागों में महिलाओं का सशक्तिकरण होना बाकी है। संतोष श्रीवास्तव जी की कहानियाँ समाज में मौजूद नारियों की समस्या, संघर्ष आदि मुद्दों पर हमें विचार करने को मजबूर करती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. मनीष कुमार, महिला सशक्तिकरण, दशा और दिशा, मधुर बुक्स प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ 7
2. शशिबाला बंदूनी, महिला सशक्तिकरण एवं अधिकार, पूर्वांचल प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 2012, पृष्ठ 105
3. संतोष श्रीवास्तव, आसमानी आँखों का मौसम, नमन प्रकाशन, नई दिल्ली,संस्करण 2015, पृष्ठ 13
4. वहीं, पृष्ठ 16
5. वहीं, पृष्ठ 38
6. वहीं, पृष्ठ 56
7. वहीं, पृष्ठ 119
8. वहीं, पृष्ठ 90
9. संपा. अनिल कुमार, संतोष श्रीवास्तव, प्रेम संबंधों की कहानियाँ, नमन प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2012, पृष्ठ 45